उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण में अवसर और चुनौतियाँ

प्रधान संपादक
डॉ. बी.डी. अहिरवार
प्राचार्य

संपादक /संगोष्ठी समन्वयक
डॉ.कुलदीप यादव

सह संपादक/संगोष्ठी सचिव
डॉ.अशोक कुमार पन्या

उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण में अवसर और चुनौतियाँ

राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी पुस्तक
दिनांक 04-05 फरवरी 2022

प्रधान संपादक
डॉ. बी.डी. अहिरवार
प्राचार्य

संपादक /संगोष्ठी समन्वयक
डॉ.कुलदीप यादव

सह संपादक/संगोष्ठी सचिव'
डॉ.अशोक कुमार पन्या

संपादक मंडल
डॉ.नीतेश ओबराइन,सुश्री आकर्षा तिवारी

श्री राजीव गांधी शासकीय महाविद्यालय बण्डा जिला सागर म.प्र.

Opportunities and Challenges in Liberalization, Privatization and Globalization

Yajur Publishing House
ISBN: 979-888815908-8
Feb-4-5-2022

This book has been published with all reasonable efforts taken to make the material error-free after the consent of the author. No part of this book shall be used, reproduced in any manner whatsoever without written permission from the author, except in the case of brief quotations embodied in critical articles and reviews.

The Author of this book is solely responsible and liable for its content including but not limited to the views, representations, descriptions, statements, information, opinions and references ["उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण में अवसर और चुनौतियाँ"]. The Content of this book shall not constitute or be construed or deemed to reflect the opinion or expression of the Publisher or Editor. Neither the Publisher nor Editor endorse or approve the Content of this book or guarantee the reliability, accuracy or completeness of the Content published herein and do not make any representations or warranties of any kind, express or implied, including but not limited to the implied warranties of merchantability, fitness for a particular purpose. The Publisher and Editor shall not be liable whatsoever for any errors, omissions, whether such errors or omissions result from negligence, accident, or any other cause or claims for loss or damages of any kind, including without limitation, indirect or consequential loss or damage arising out of use, inability to use, or about the reliability, accuracy or sufficiency of the information contained in this book.

National Seminar

Feb.4-5-2022

Chief Editor/Principal
Dr.B.D.Ahirwar

Editor / Seminar Coordinator
Dr.Kuldeep Yadav

Sub Editor / Seminar Controller
Dr.Ashok Panya

Editorial Board
Dr. Nitesh Oberine,
Ms. Aakarsha Tiwari

Govt.Shri Rajiv Gadhi College Banda (MP)
NAAC B Accredited

Organized By : World Bank under the Aegis of IQAC under MPHEQIP

Publisher:
Yajur Publishing House
6 jeevan fakir c ambabadi
dahisar east , Borivali -400091(MS)
E-mail:yajurpress@rediffmail.com

Priter
Notion Press
No.50,ChettiyarAgaramMainRoad,
Vanagaram, Chennai, Tamil Nadu 600095

अनुक्रमणिका

क्र	पेपर का नाम	लेखक	पेज क्र
	अनुक्रमणिका		V-VI
	प्रधान संपादक की कलम से...		7-8
	प्रस्तावना,		9-11
1	Understanding Globalisation: A Bhartiya Perspective	Prof Anupma Kaushik	13-19
2	Vocal for Local : Global Marketing Strategies No Snub to globalization	Dr. Ruchi Rathore	20-23
3	New Economic Reform 1991 in India: Special Reference to Liberalisation	Vishnu Kant Verma ,Dr. Harinarayan Vishwakarma	24-31
4	GLOBALIZATION AND PUBLIC POLICY: POLICY PRIORITIES FOR INDIA	Ms. Alankrita Gangele	32-38
5	Impact of Liberalization, privatization and globalization , on business community: a case study of Sindhi community	Sameer Harshad Pande	39-47
6	LIBERALIZATION, PRIVATIZATION AND GLOBALIZATION AND ITS IMPACT ON ECONOMY AND SOCIETY:A CASE OF DATA PROTECTION OF CONSUMERS	Mr. Vivek Prasad	48-53
7	21 वीं सदी के भारत में मानवाधिकारों का वर्तमान स्वरूप एवं अवधारणायें	डॉ0 भगवानदास	54-64
8	भूमंडलीकरण और भारतीय राजनीतिक परिपेक्ष्य	डॉ.नेहा निरंजन	65-69
9	वैश्वीकरण का राज्य, समाज, शिक्षा, संस्कृति एवं मूल्यों पर प्रभाव	डॉ. रजनी दुबे	70-74
10	"उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण और चुनौतियाँ"	डॉ. सरोज बिल्लौरे	75-78
11	बैंको का निजीकरण	डॉ. एच.एस.गणवीर	79-83
12	वैश्वीकरण के दौर में राजनीति और मीडिया की भूमिका	डॉ. निशा जैन	84-89
13	भारतीय विदेश नीति पर वैश्वीकरण और उदारीकरण का प्रभाव	डॉ. नियाज अहमद अंसारी डॉ.नीतेश ओबराइन	90-97
14	उदारीकृत अर्थव्यवस्था के तीन दशक: समीक्षात्मक विश्लेषण	डॉ.कमलेश दुबे	98-105
15	वैश्वीकरण के दौर में हिंदी की भूमिका	डॉ. प्रज्ञा पाण्डेय	106-109
16	वैश्वीकरण: अवसर और चुनौतियाँ	डॉ. मनीष कुमार साव	110-113
17	"भूमण्डलीकरण, उदारीकरण, निजीकरण; अवसर व चुनौती"	दिनेश कुमार अहिरवार	114-117

18	विचारधाराओं का संकट और भूमंडलीकरण	डॉ. दीपक मोदी	118-122
19	वैश्वीकरण का राष्ट्रों की भूमिका पर प्रभाव	डॉ. रणवीर सिंह ठाकुर	123-126
20	आर्थिक राष्ट्रवाद और उदारीकरण ,निजीकरण और वैश्वीकरण	डॉ. अशोक पन्या	127-132
21	विनिवेश और निजीकरण	डॉ. निहार पाण्डेय	133-136
22	वर्तमान वैश्वीक व्यवस्था का नौकरशाही पर प्रभाव	डॉ.हरिशंकर सेन डॉ.कुलदीप यादव	137-140
23	वैश्वीकरण का भारतीय समाज पर प्रभाव: एक अध्ययन	डॉ.प्रविता सिंह	141-145
24	वैश्वीकरण का भारतीय समाज पर प्रभाव: अवसर और चुनौतियाँ	डॉ.रविता सिंह	146-151
25	"उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण: भारत के संदर्भ में "	डॉ॰ दीप्ति सिंह	152-154
26	भारत और वैश्वीकरण	डॉ. गिरीश लाम्बा डॉ . ऋतु व्यास विकास कुमार	155-157
27	वैश्वीकरण, उदारीकरण और निजीकरण के दौर में नागरिक समाज का बदलता स्वरूप		158-167
28	निजीकरण के फायदे और नुकसान	शालिनी सिंह परिहार	168-169
29	भारत और निजीकरण	सुश्री स्वाति जैन	170-173
30	भारत मे वैश्वीकरण के प्रभाव एवं चुनौंतिया	डॉ. प्रेम कुमार सागर	174-179
31	निजीकरण: अवसर और चुनौतियाँ	सोनम बाल्मीकि	180-183
32	वैश्वीकरण के अवसर एवं राजनीतिक प्रभाव	डॉ. दीपक जॉनसन	184-185
33	वैश्वीकरणः अवसर और चुनौतियाँ	लक्ष्मी बनवारी	186-189
34	उदारीकरण अवसर और चुनौतियाँ	शारदा अहिरवार	190-193
35	उदारीकरण और वैश्वीकरण का नौकरशाही पर प्रभाव	डॉ.कलसिंह पटेलिया	194-197
36	वैश्वीकरण अवसर और चुनौतियाँ	आकाश सेन	198-201
37	वैश्वीकरण का भारतीय समाज पर प्रभाव	डॉ.मृदुल कुमार सेन	202-207
38	निजीकरण: अवसर और चुनौतियाँ	प्रह्लाद अहिरवार	208-212
39	उदारीकरण मै अवसर और चुनोतियाँ	कु. रजनी चौदहा	213-215
40	भारतीय अर्थव्यवस्था में निजीकरण संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ	डॉ. प्रदीप श्रीवास्तव	216-223

वैश्वीकरण का राज्य, समाज, शिक्षा, संस्कृति एवं मूल्यों पर प्रभाव

डॉ. रजनी दुबे प्राध्यापक
राजनीति विज्ञान
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर
उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

प्रस्तावना

अरस्तु ने कहा है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसकी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति समाज में ही होती है, वह अकेला रह कर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकता है, उसी प्रकार आज वैश्विक वातावरण में कई देश (राज्य) बिना दूसरे देशों से व्यापार या संपर्क किए बिना अपनी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकते है। विश्व में नित प्रतिदिन में नये-नये अनुसंधान हो रहे हैं, उनका फायदा दूसरे देशों को तभी मिल सकता है जब वे देश आपस में संपर्क में रहेंगे। इन्हीं अवधारणाओं की वजह से वैश्वीकरण या भूमंडलीकरण संभव हो पाया है। जब कोई देश अन्य राष्ट्रों के साथ वस्तु सेवा, पूंजी तथा बौद्धिक संपदा आदि के बिना किसी प्रतिबंध के परस्पर आदान-प्रदान करता है, तो इसे वैश्वीकरण या भूमंडलीकरण कहते हैं। मुख्य शब्द – वैश्वीकरण, अनुसंधान, पूंजीवाद, दूरस्थ अधिकार, राज्य प्रवाह वर्तमान आधुनिक समय में संचार क्रांति ने पूरी दुनिया की दूरियां कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। इसी वजह से संपूर्ण विश्व एक गांव में परिवर्तित हो गया है। विश्व में संचार क्रांति की प्रभावशाली भूमिका के कारण एक नई विचारधारा का आगाज हुआ है, जिसे हम वैश्वीकरण नाम से जानते हैं। वैश्वीकरण की बुनियादी बात है प्रवाह । प्रवाह कई तरह के होते हैं जैसे वस्तु प्रवाह पूंजी प्रवाह, व्यापार प्रवाह, विचार प्रवाह और आवाजाही प्रवाह आदि । इन सब प्रवाहों की निरंतरता से विश्वव्यापी परस्पर जुड़ाव उत्पन्न हुआ है। इन्हीं सब घटनाओं को वैश्वीकरण कहते हैं।

वैश्वीकरण का समाज पर प्रभाव- वैश्वीकरण के बाद भारतीय समाज काफी बदल रहा है और भारतीय संस्कृति में बहुत सारे बदलाव आए हैं। वैश्वीकरण अर्थव्यवस्थाओं और समाजों के एकीकरण की प्रक्रिया है, और विभिन्न संस्कृतियों का परस्पर संबंध संस्कृति एकीकरण और परस्पर क्रिया वैश्वीकरण का एक महत्वपूर्ण पहलू है। सामाजिक दृष्टिकोण से, वैश्वीकरण ने देशों के राष्ट्रीय जीवन जैसे जीवन शैली, दृष्टिकोण, पहचान, कार्य संस्कृति परिवारिक संरचना और मूल्यों और खाने की आदतों आदि पर काफी प्रभाव डाला है।

वैश्वीकरण ने न केवल भारतीय अर्थव्यवस्था और समाज को बल्कि संपूर्ण शिक्षा और ज्ञान प्रणाली को भी प्रभावित किया है। ज्ञान का उत्पादन, उपयोग और हस्तांतरण भारत में महत्वपूर्ण अपरिवर्तनीय बदलाव का गवाह है। भारत जैसे समाज के लिए जो ज्ञान आधारित समाज था साथ ही भारत में ज्ञान आधारित

अर्थव्यवस्था जीवन और व्यवसाय के सभी क्षेत्रों में वैज्ञानिक अनुसंधान, और विकास का सबसे महत्वपूर्ण चालक है।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया के प्रभाव के तहत पूरी शिक्षा प्रणाली अंतर्राष्ट्री। शिक्षा प्रणाली में नई वास्तविकताओं के साथ समायोजित करने के लिए एक निरंतर और निरंतर परिवर्तन के दौर से गुजर रही है मुख्य रूप से उच्च शिक्षा में वैश्वीकरण के साथ संचार प्रौद्योगिकी में तेजी से बदलाव आ रहा है। साथ ही स्कूल और विश्वविद्यालय प्रणाली के भीतर छात्राओं और शिक्षकों के बीच संबंध बदल रहा है।हमारी पूरी प्रणाली विचारों मूल्यों और ज्ञान निर्माण पर आधारित है, जो औद्योगिकीकरण से सूचना, आधारित समाज की ओर बदलाव पैदा कर रही है। यह हमारी संस्कृति पर वैश्विक संस्कृति के प्रभाव को दर्शाता है और संस्कृतिक साम्राज्यवाद का एक नया रूप हमारे सामने आता है। वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण ऐसी स्थिति पैदा हुई है, जिसमें यह कहा जा सकता है कि भारत में विद्यमान आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आधुनिकीकरण की स्थिति में लोगों में संकुचित भावना और पहचान के प्रति जागरूकता को बढ़ावा दिया है। भारत की वेशभूषा, सृजनात्मक, क्रियाकलाप,भाषागत प्राथमिकता,संगीत,स्त्री-पुरुष संबंध, बच्चों के गोद लेने की प्रवृत्ति अत्याधुनिक क्रियाकलापों को वरीयता, सिनेमा के प्रति रुचि, सामाजिक रीति-रिवाजों के प्रति विश्वास और नित्य रूपों पर वैश्वीकरण के प्रभाव को देखा जा सकता है। भारतीय युवाओं पर वैश्वीकरण का प्रभाव ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में नगरीय क्षेत्रों में अधिक हावी है। वैश्वीकरण से परिवारिक संरचना में भी बदलाव आया है। संयुक्त परिवार का स्थान एकांकी परिवार ने ले लिया है। हमारी खानपान की आदतें त्योहार,समारोह पर भी वैश्वीकरण का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है।

वैश्वीकरण और नागरिक समाज - वैश्वीकरण की वास्तविकता अचूक है, क्योंकि यह हमारे जीवन के प्रत्येक पहलू जैसे आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक या पर्यावरणीय को प्रभावित करती है। यह बहुराष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय निगमों या वैश्विक कंपनियों द्वारा संचालित एक बाह्यकारी शक्ति है, जो व्यक्तियों को नियंत्रण कर अनजाने और दूरवर्ती स्थलों के अधीन करती है। उदाहरण के लिए बहुराष्ट्रीय कार्पोरेशन (निगम)अपने लाभ और शक्ति का विस्तार करने के लिए बहुराष्ट्रीय बैंकों (विश्व बैंक और अंर्तरराष्ट्रीय मुद्रा कोष) के सहयोग से वित्त ऋण और अन्य संसाधनों को आसानी से उपलब्ध कराने के साथ अधिक से अधिक शक्ति प्राप्त करते हैं, जिसके परिणाम स्वरूप वैश्वीकरण अमीर को अधिक अमीर बनाने के लिए गरीब को अधिक गरीब बनाने के मूल्य पर प्रोत्साहित करता है। यह पृथ्वी, वायु और हवा में पर्यावरणीय प्रदूषण फैलाने में भी योगदान देता है और विश्व के विशेष रूप से विकासशील और विकास के अधीन हिस्सों में सहवर्ती संस्कृतिक गिरावट में भी इसका योगदान है। इस संदर्भ में नागरिक समाज "दूरस्थ अधिकारों के प्रभाव से दूर

कम से कम उनकी "स्पष्ट पहुंच" और"अतिक्रमण" से स्वयं को व्यक्त करते हैं और बचाते हैं।
चाहे वह पर्यावरणीय अधिकारियों का संरक्षण हो शिक्षा के लिए समर्थन हो या महिलाओं को बढ़ावा देना जातीय या धार्मिक वैश्वीकरण वैश्विक नागरिक समाज (जी सी एस) की प्रगति के परिणाम है जी सी एस उपयुक्त कारणों से सौहार्द्र कर रहा है जिसे फाल्क ने "नीचे से वैश्वीकरण" कहा था।

वैश्वीकरण का वेशभूषा पर प्रभाव - भूमंडलीकरण का प्रत्यक्ष प्रभाव हमारे पहनावे में भी देखा जा सकता है। समुदायों के अपने संस्कार, परंपराएं और मूल्य भी परिवर्तन हो रहे हैं। पाश्यात्य संस्कृति और परंपरा भारतीय संस्कृति में पैर पसार रही है। उदाहरण के तौर पर भीलाला जनजाति समूह के लोग वैश्वीकरण के कारण अन्य लोगों के संपर्क में आने लगे हैं तथा समाज में अपनी परिस्थिति को उच्च करने के लिए अपना परंपरागत व्यवसाय (कृषि) छोड़कर दूसरा व्यवसाय अपना रहे हैं। जिसके लिए अपने गांव से दूसरे गांव जिले एवं राज्य में पलायन कर रहे हैं। जिन लोगों ने अपने जीवनकाल में रेल तक नहीं देखी थी, आज वे यातायात के आधुनिक साधन वायुयान में सफर कर रहे हैं। ये अपने आर्थिक जीवन में वस्तु विनियम के स्थान पर मुद्रा का प्रयोग करने लगे हैं।

वैश्वीकरण में भारत में पूर्व में प्रचलित संयुक्त परिवार प्रणाली से एकल परिवार प्रणाली के रूप में समरूपीकरण की प्रवृत्ति का सृजन किया है। वृद्धाश्रमों की बढ़ती संख्या को प्रायः इस विचार के प्रस्तावकों द्वारा एक साक्ष्य के रूप में उद्धृत किया जाता है। भूमंडलीकरण भारत की सदियों पुरानी सांस्कृतिक विरासत को नष्ट कर एक वैश्विक संस्कृति को थोप रही है, जो पश्चिमीकरण से प्रभावित है। संयुक्त परिवार टूटकर एकल परिवार के रूप में और फिर सूक्ष्मय परिवार (माइक्रो फेमिली) में बदलते जा रहे हैं।वैश्वीकरण के राजनीतिक प्रभाव वैश्वीकरण की वजह से राज्य सत्ता की शक्तियों में कमी आई है जैसे-

1. न्यूनतम हस्तक्षेपकारी राज्य की धारणा को अपनाया जाना।
2. बाजार द्वारा आर्थिक व सामाजिक प्राथमिकताओं का निर्धारण।
3. बहुराष्ट्रीय कंपनियों के प्रभाव में वृद्धि

वैश्वीकरण की वजह से राज्य के हर क्षेत्र में राज्य शक्ति में कमी आती है यह कथन असत्य है। राजनीतिक समुदाय के आधार के रूप में राज्य की प्रधानता को वैश्वीकरण से कोई चुनौती नहीं मिली है। आज भी राज्य कानून और व्यवस्था तथा राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे अनिवार्य कार्यों को पूर्ण कर रहे हैं।वर्तमान में सूचना एवं प्रौद्योगिकी में उल्लेखनीय विकास होने की वजह से सरकारों की शक्ति में वृद्धि हुई है। राज्य अपने नागरिकों के बारे में सूचनाएं ज्यादा आसानी से एकत्र कर पा रहे हैं तथा प्रशासनिक कार्यों को भी प्रौद्योगिकी की वजह से ज्यादा कारगर तरीके से करने में सक्षम है।

वर्तमान समय में वैश्वीकरण के प्रतिरोध के अनेक कारण हैं-

1. वैश्वीकरण से पूंजीवाद फल-फूल रहा है, जिससे धनी तथा निर्धनों के बीच खाई बढ़ती जा रही है।
2. वैश्वीकरण से राज्य सत्ता की ताकत में कमी आई है और उनकी शक्ति में कमी आने की वजह से गरीबों के हितों की रक्षा करने की क्षमता में कमी आती है।
3. राजनीतिक दृष्टि से राज्य कमजोर हो रहे हैं
4. वैश्वीकरण से अविकसित देशों में बहुराष्ट्रीय कंपनियां मनमानी करती हैं तथा उनका एकाधिकार चलता है।
5. अधिक ताकतवर देश कमजोर देशों के ऊपर जबरदस्ती वैश्वीकरण की प्रक्रिया थोप रहे हैं क्योंकि विकसित देशों को बाजार की आवश्यकता होती है।
6. वैश्वीकरण से परंपरागत संस्कृति को क्षति होती है।
7. वैश्वीकरण का लाभ अधिकांश जनता तक नहीं पहुंच पाता है, इससे असमानता बढ रही है। उपर्युक्त सभी कारणों वैश्वीकरण का तीव्र विरोध किया जा रहा है।वर्तमान समाज में लोक प्रशासन की महत्वपूर्ण भूमिका को सामान्य रूप से स्वीकार किया जाता है तथा यह भूमिका राज्य के कार्यों के साथ-साथ और अधिक व्यापक एवं महत्वपूर्ण होती जा रही है। 19वीं सदी की "अहस्तक्षेप राज्य बीसवीं सदी में लोककल्याणकारी राज्य के रूप में प्रस्तुत हो गई तथा मानवीय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इसका संबंध हो गया। राज्य के कार्य क्षेत्र में वृद्धि के साथ-साथ स्वाभाविक रूपसे लोक प्रशासन का कार्य क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया। लोक प्रशासन के कार्य क्षेत्रों का विस्तार एक सर्वव्यापी प्रवृत्ति है विकासशील, विकसित तथा अविकसित देशों में भी दृष्टिगोचर होती रही है।

यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे अंतरराष्ट्रीय बाजार की ताकतों या ऊपर से वैश्वीकरण का सामना करने के लिए अंतरराष्ट्रीय लोकतांत्रिक ताकतों को सम्मिलित किया गया है। अप्पादुराई ने इसे "जमीनी स्तर पर वैश्वीकरण" के रूप में परिभाषित किया है इसका उद्देश्य वैश्वीकरण द्वारा बनाई गई असमानताओं को दूर करना या निवारण करना है। जी सी एस ने इसलिए वैश्विक प्रशासन में "विमर्शी एजेंट" का गठन किया। विशेष रूप से बोहमान मान ने सुझाव दिया है कि जीसीएस को सार्वजनिक क्षेत्रों की तीन अनिवार्य विशेषताओं को अपनाना चाहिए।

1. सार्वजनिक चर्चा में भाग लें।
2. स्तंत्रता और समानता के आदर्शों के लिए प्रतिबंध रहे।
3. "विमर्शी ऐजेन्ट" होने के अतिरिक्त अनिश्चित दर्शकों तक पहुंचे।

वैश्वीकरण के राजनीतिक प्रभावों को निम्नलिखित बिंदुओं से स्पष्ट किया जा सकता है- वैश्वीकरण की वजह से राजसत्ता की शक्तियों में कमी आई है जिसका विवरण इस प्रकार है।

1. न्यूनतम हस्तक्षेपकारी राज्य की धारणा को अपनाया जाना।
2. बाजार द्वारा आर्थिक व सामाजिक प्राथमिकताओं का निर्धारण।
3. बहुराष्ट्रीय कंपनियों के प्रभाव में वृद्धि

वैश्वीकरण की वजह से राज्य के हर क्षेत्र में राज्य शक्ति में कमी आती है यह कथन कि वैश्वीकरण ने महिलाओं पर भी विपरीत प्रभाव डाला है वैश्वीकरण के दौर में महिलाओं की मुश्किलें बड़ी हैं। बढ़ते मशीनीकरण से नौकरियों में असुरक्षा कम वेतन, परंपरागत हुनर की अनदेखी विदेशी कंपनियों की मनमानी शर्ते और उनके समक्ष कानून की असमर्थता आदि परिस्थितियां महिलाओं को न्याय दिलाने में असफल रही है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के अंतर्गत महिलाओं का वस्तुकरण हो गया है। बड़ी कंपनियां अपनी सेवाओं तथा वस्तुओं को बेचने के लिए महिलाओं की योग्यता,क्षमता तथा व्यक्तित्व का प्रयोग करती हैं। वैश्वीकरण के इस युग में समाज एवं महिलाओं पर नकारात्मक प्रभाव देखा जा सकते हैं।

वैश्वीकरण के कारण विकसित देशों में महिलाएं निर्धनता एवं भेदभाव का शिकार हो रही हैं। एक ही वजह एक ही तरह के काम में पुरुष तथा महिलाओं के साथ भेदभाव किया जाता है।

आज महिलाओं के श्रम को उत्पादन से सीधे नहीं जोड़ा जाता इसी कारण पुरुष विशिष्ट हो गए और महिलाएं महत्वहीन रह गई। महिलाएं ज्यादातर असंगठित संस्थाओं में काम करती हैं और नियम हीनता के चलते वे शोषण का शिकार हो जाती हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ के सर्वेक्षण के अनुसार हमारे देश में प्रतिवर्ष डेढ़ करोड़ लड़कियां जन्म लेती हैं। इनमें 25 लाख 15 वर्ष की उम्र से पहले ही मर जाती है इसका कारण समाज में महिलाओं के प्रति भेदभाव का व्यवहार है।आज भी महिला श्रमिकों को कम मजदूरी के साथ वांछित अधिकारों से वंचित होना पड़ता है ।

उपभोक्तावाद, हिंसा तथा स्वच्छंद यौन व्यवहार आदि का समाज व महिलाओं पर घातक प्रभाव पड़ा है। वैश्वीकरण जहां विकासशील देशों के विकास को सुनिश्चित करता है, वही यह समाज की आर्थिक रूप से गरीब महिलाओं को अधिक उत्पीडित करने कर भी प्रयास करता है। उपर्युक्त नकारात्मकताओं के बावजूद वैश्वीकरण के कुछ सकारात्मक पहलू भी है जैसे-

- बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन के द्वारा महिलाओं को राष्ट्र की सामाजिक, आर्थिक प्रगति में भगीदार बनाये जाने के प्रयास किये जा रहें हैं।
- इस प्रक्रिया के अर्न्तगत महिलाओं के अनुकुल रोजगार निर्माण किया जा रहा है। ताकि योग्य तथा सक्षम महिलायें राष्ट्र के आर्थिक विकास में सक्रिय भागीदारी निभा सकें।
- आज महिलायें अधिक स्वतंत्र व आत्मनिर्भर है।
- अतः इससे संदेह नहीं कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया से महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है किन्तु कई अपेक्षित सुधार अभी भी बाकी है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः-

1. भारतीय विदेश नीति: जे. एन. दीक्षित, प्रभात प्रकाशन दिल्ली 2008
2. विदेश नीतियां: डॉ. मथुरालाल शर्मा, प्रकाश नारायण नाहाणी, कालेज बुक डिपो जयपुर -2
3. प्रमुख देशों की विदेश नीतियां: सी. एम. कोली, प्रकाशन साहित्यगार, जयपुर -3 संस्करण 2001
4. दैनिक भास्कर: 28 मार्च 2022
5. दैनिक भास्कर: 29 मार्च 2022
6. भारत की विदेश नीति: हरीश कुमार खत्री, कैलाश सदन भोपाल, 2016